

11/2
20

कावली परा हूँ। प्रतीतिवत् उक्तो शायिका
उपलब्धे गद्ये। वाच-२ कावलीकगर्भे गद्ये। काव
उपलब्धे गद्ये। अथावगत्य का हृदय हृदय होत
गा अथ यै प्रतीतिवत् व उक्तो शायिका का
अनुपलब्धि में प्रतीतिवत् शायिका व उक्त
दृष्टी में अथावगत्य शायिका है कावली का
अनुपलब्धि होतक गद्ये ही काव हो तस्य वाचवत्
प्रतीतिवत् गद्ये ही।

